बाहिय दारुचीरिय
एवं
भद्दा कुण्डलकेसा

(क्षिप्र-अभिज्ञा प्राप्त करने वालों में अग्र)

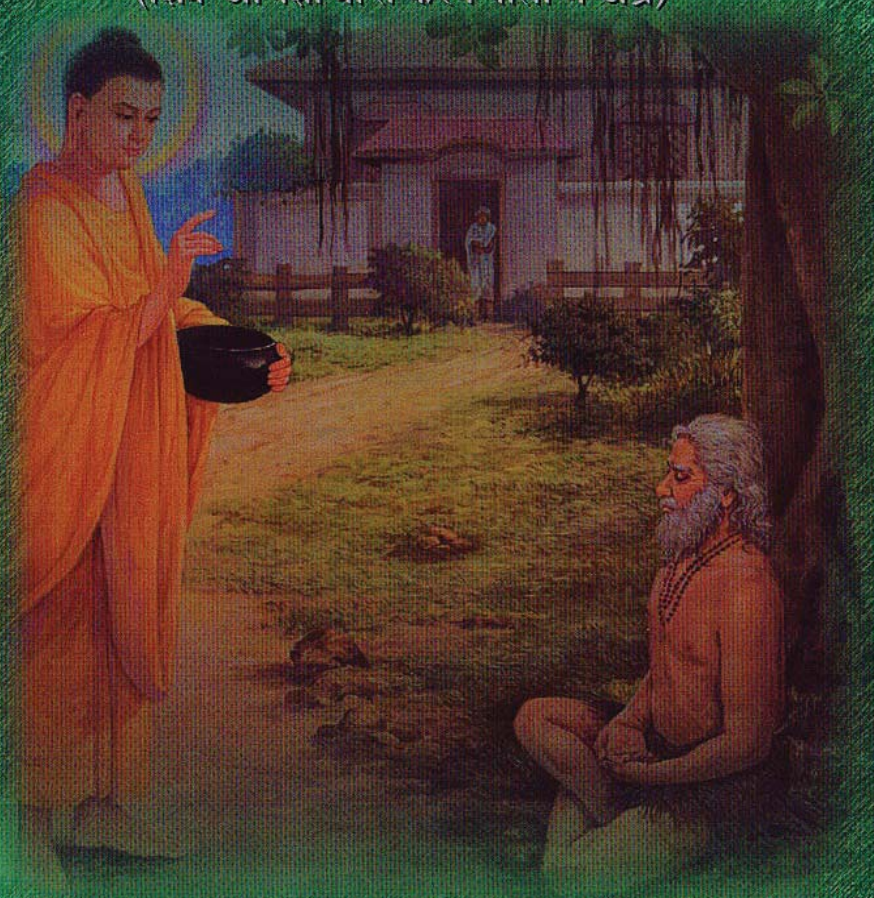

विपश्यना विशोधन विन्यास

बाहिय दारुचीरिय

एवं

भद्दा कुण्डलकेसा

(क्षिप्र-अभिज्ञा प्राप्त करने वालों में अग्र)

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

भगवान बुद्ध की उद्घोषणा

****

"एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनं

खिप्पाभिञ्ञानं यदिदं बाहियो दारुचीरियो।"

"एतदग्गं, भिक्खवे, मम साविकानं भिक्खुनीनं
खिप्पाभिञ्ञानं यदिदं भद्दा कुण्डलकेसा।"

-अङ्गुत्तरनिकाय (१.१.२१६, २४३)

"भिक्षुओ, मेरे भिक्षु-श्रावकों में – क्षिप्र-अभिज्ञा
प्राप्त करने वालों में अग्र हैं बाहिय दारुचीरिय।"

"भिक्षुओ, मेरी भिक्षुणी-श्राविकाओं में – क्षिप्र-अभिज्ञा
प्राप्त करने वालियों में अग्र हैं भद्दा कुण्डलकेसा।"

****

बाहिय दारुचीरिय एवं भद्दा कुण्डलकेसा

विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय [vii]

बाहिय दारुचीरिय १

सुप्पारक पत्तन १
वर्तमान कथा १
बाहिय हितैषी ब्रह्मा २
ऐसा ही सीखना चाहिए ३
क्षिप्र-अभिज्ञा प्राप्त बाहिय दारुचीरिय ६
बाहिय दारुचीरिय का पूर्व दुष्कर्म ७

भद्दा कुण्डलकेसा ८

भद्दा-सत्तुक का जन्म ८
यौवनकाल ९
भद्दा-सत्तुक का विवाह १०
प्रत्युत्पन्नमति भद्दा १०
सत्तुक द्वारा भद्दा की हत्या का षड्यंत्र ११
भद्दा का गृहत्याग १३
जंबु परिव्राजिका १४
परिव्राजिका का स्थविर सारिपुत्त के साथ शास्त्रार्थ . १५
अतीत कथा १६
भगवान पदुमुत्तर का शासनकाल १६
भगवान कस्सप का शासनकाल १७
भगवान गौतम बुद्ध का शासनकाल १७
कुण्डलकेसा के उद्गार १८
परिशिष्ट २०

प्रकाशकीय

प्रकाशकीय

भगवान बुद्ध की शिक्षा सभी के लिए एक-समान थी – चाहे कोई पुरुष हो या नारी। किसी प्रकार का कोई भेद-भाव नहीं। जो इस पथ पर चले उसी के लिए आशुफलदायिनी। सभी को एक-समान फल देने वाली।

बुद्ध की शिक्षा का अनुकरण कर बाहिय दारुचीरिय तथा भद्दा कुण्डलकेसा ने एक-समान निर्वाण का फल चखा। भगवान ने अपने भिक्षु-श्रावकों तथा भिक्षुणी-श्राविकाओं में आयुष्मान बाहिय दारुचीरिय तथा भद्दा कुण्डलकेसा को क्षिप्र-अभिज्ञा (शीघ्र विशिष्ट ज्ञान) प्राप्त करने वालों में अग्र की उपाधि प्रदान की।

****

किसी दुर्घटनावश बाहिय दारुचीरिय नाम का व्यक्ति सुप्पारक नामक गांव में वास करने लगा। वह अर्हत माना जाता था। वह भी अपने आप को अर्हत कहने लगा था।

परंतु एक दिन किसी हितैषी ने बड़े प्यार से उसे समझाया कि वह अभी अर्हत नहीं हुआ है और न ही अर्हत होने के मार्ग पर आरूढ़ है। उसने उत्सुकतावश प्रश्न किया, "क्या इस जगत में कोई ऐसा व्यक्ति है जो अर्हत हो गया हो?"

उत्तर मिला – "हां, अवश्य है। इस समय भगवान अर्हत सम्यक-संबुद्ध सावत्थी के जेतवन में विहार कर रहे हैं।"

उसने राजनगरी सावत्थी की ओर शीघ्रता से कदम बढ़ाये। कुछ दूर चलने पर भगवान सम्यक-संबुद्ध को राजपथ पर भिक्षाटन के लिए जाते हुए देखा। तब श्रद्धाविभोर हो भगवान के सामने घुटने टेक दिये, उनके चरणों पर सिर रख दिया।